दिनांक 31/07/2024 (बुद्धवार)

अध्ययन सामग्री. स्नातक III प्रतिष्ठा

विषय- हिन्दी

शीर्षक : विभावना अलंकार :-

पदनाम- डॉ० बजरंग प्रताप केंडी

प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

एच० डी० जैन कॉलेज आरा।

विभावना अलंकार :- कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति का वर्णन करना विभावना अलंकार कहलाता है-

यथा-1 बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना, कर बिनु कर्म करइ विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी। बिनु बानी बकता बड़ योगी ॥

यहाँ पैर (कारण) के अभाव में चलना तथा कान, हाथ, मुख और वाणी के बिना ही क्रमशः सुनना, कर्म करना, रसास्वादन करना तथा बोलना- सारी क्रियाओं का संपादन होना बताया गया है। इसलिये उक्त छंद में विभावना अलंकार घटित होता है।

2. काम कुसुम धनुसायक लिन्हें।
सकल भुवन अपने बस किन्हें ॥

यहाँ फूल के धनुष के सहारे और फूल के ही बाण से सारे संसार को वशीभूत करना बताया गया है। यानी अत्यल्प कारण से ही कार्य का सम्पन्न किया जाना- बताया गया है। आशय यह है कि काम का प्रभाव अत्यन्त प्रबल है। काम के आवेग से संसार का कोई व्यक्ति अछूता नहीं रह सकता- यह बतलाना कवि का अभीष्ट है। अतः यहाँ भी विभावना अलंकार घटित है।